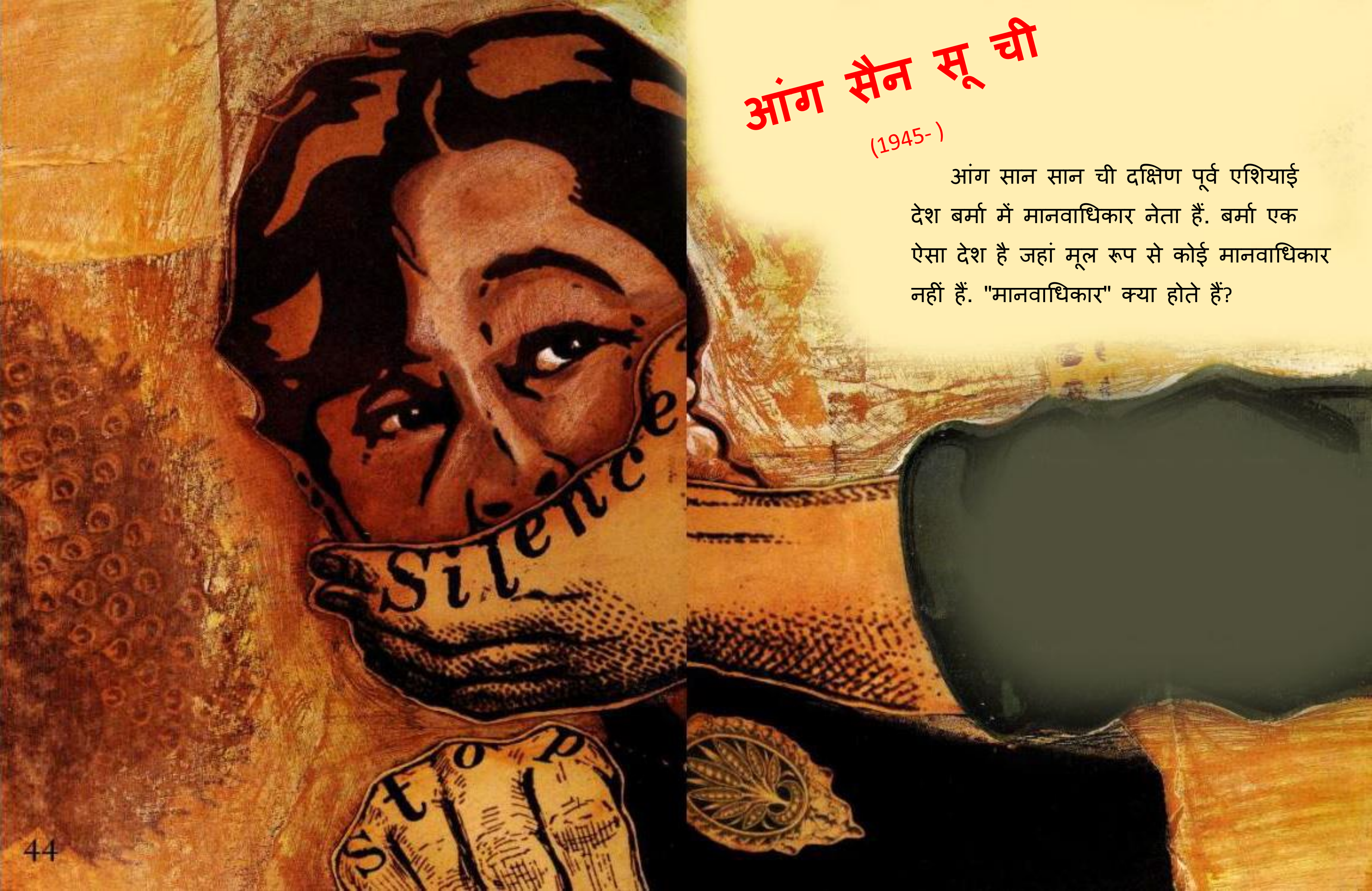
आंग सैन सू ची

(1945-)

आंग सान सान ची दक्षिण पूर्व एशियाई देश बर्मा में मानवाधिकार नेता हैं. बर्मा एक ऐसा देश है जहां मूल रूप से कोई मानवाधिकार नहीं हैं. "मानवाधिकार" क्या होते हैं?



कुछ ऐसे मानवाधिकार जो बर्मा में मौजूद नहीं हैं: 1) सरकार के खिलाफ बोलने का अधिकार, 2) अपना पेशा चुनने का अधिकार, 3) पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए जाने पर निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार, और 4) पुलिस द्वारा एक इंसान की तरह व्यवहार करने का अधिकार.

कोई भी बर्मा का निवासी, जो इन अधिकारों की मांग करता है उसे या तो पुलिस गोली मार देती है या फिर उसे जेल में डाल देती है. इनमें से अधिकतर गिरफ्तारियों और हत्याओं पर पर्दा डाल दिया जाता है, और उन्हें भुलाकर दफन कर दिया जाता है.

हालाँकि, जब 1989 में आंग सान सू ची को, उनकी सरकार के खिलाफ बोलने के लिए गिरफ्तार किया गया, तो पूरी दुनिया उन्हें देख रही थी. वो पहले से ही काफी प्रसिद्ध थीं. उनके पिता सेना के एक महत्वपूर्ण जनरल थे - आधुनिक बर्मा के जॉर्ज वाशिंगटन. उन्होंने अपने देश को इंग्लैंड से आजादी दिलाने में मदद की और इस प्रक्रिया में वे आधुनिक बर्मा के पहले राजनैतिक नेता बने. अफसोस की बात थी कि आधिकारिक तौर पर आजादी मिलने से पहले ही, उनकी हत्या कर दी गई थी. तब सू ची केवल दो बरस की थीं. वो नहीं जानती थीं कि वो भी बड़ी होकर एक नेता बनेंगी, और उन्हीं पुलिसवालों ओर सेना से लड़ेंगी जिन्होंने उनके पिता को मार डाला था. हालांकि उसके विपरीत, गांधी की तरह, सू ची ने भी लड़ाई के लिए शांतिपूर्ण साधनों का इस्तेमाल किया. गांधी की तरह, उनकी शिक्षा भी इंग्लैंड में हुई. गांधी की तरह ही वो भी एक बुद्धिमान और प्रतिभाशाली वक्ता बनीं. गांधी की तरह ही, उनकी सरकार को उनसे नफरत थी.

1989 में, वो मानवाधिकारों पर एक सार्वजनिक भाषण दे रही थीं, तभी अचानक सेना ने आकर उन पर अपनी बंदूकें तान दीं. उन्हें गोली मारने के आदेश थे. सू ची ने अपनी बात रखी और बोलना जारी रखा. अंतिम समय में कमांडिंग ऑफिसर ने हत्या रोक दी. बहरहाल, कुछ महीने बाद उन्हें छह साल के लिए "हाउस अरेस्ट" (अपने ही घर में जेल) में डाल दिया गया.

अपने कारावास के दौरान, सू ची बर्मा की प्रधान मंत्री चुनी गईं! लेकिन देश को चलाने वाले सैन्य तानाशाहों ने इस बात की कोई परवाह नहीं की कि लोगों ने किसे चुना था. सैन्य तानाशाह ही सत्ता में बने रहे और सू ची नजरबंद रहीं. अपने कारावास के दौरान, उन्होंने नोबेल शांति पुरस्कार भी जीता, जिसे स्वीकार करने के लिए वो अपना देश नहीं छोड़ पायीं.

सू ची के 1995 में रिहा होने के बाद से उन्हें बार-बार गिरफ्तार किया गया. और जब भी वो मुक्त होती हैं, तो पुलिस उन्हें सार्वजनिक रूप से बोलने से रोकने का हर संभव प्रयास करती, क्योंकि उन्हें पता है कि वो सरकार के खिलाफ बोलेंगी. कई बार, सैन्य तानाशाह, सू ची के घर के आस-पास की सड़कों को कारों से भर देते हैं, जिससे सू ची बाहर नहीं जा पाएं. उन्होंने कई दिनों तक बिना भोजन या पानी के सू ची को कार में फंसा कर रखा. फिर भी सू ची बोलती रहती हैं और किताबें भी लिखती रहती हैं, ताकि पूरी दुनिया को, बर्मा में हो रहे अन्याय के बारे में पता चल सके. बर्मा को हमेशा के लिए छोड़ने के बजाय (ऐसा विकल्प उन्हें बार-बार पेश किया गया), सू ची ने 2003 से, बर्मा में नजरबंद रहना ही चुना है - सैन्य सरकार के अन्याय पर ध्यान देने के एक तरीके के रूप में. आंग सान सू ची अपने देश को एक निष्पक्ष और शांतिपूर्ण जगह बनाने की हर संभव कोशिश कर रही हैं.

